

Euphonic Combinations

सन्धिप्रकरणम्
सन्धिप्रकरण

लक्षण – परः सन्निकर्षः संहिता

सन्धिसज्ञा- “परः सन्निकर्षः संहिता” (पा. 1.4.109)

वर्णसमूहের অভ্যন্তর সামিপ্র্যকে সংহিতা বলে। অর্থাৎ নিকটস্থ দুটি অথবা ততোধিক বর্ণের মিলন সন্ধিপদবাচ্য।

- সন্ধিপ্রয়োগনম্ – বাক্যসংকোচনম্, উচ্চারণসৌকর্যম্, সুখশ্রবণতা চ।

অতঃ উক্তম্ –

সংহিতৈকপদে নিত্যা নিত্যা ধাতুপসর্গযোঃ।
নিত্যা সমাসে বাক্যে তু সা বিবক্ষামপেক্ষতে।।

- একপদে নিত্যা – গৌ+অকঃ=গায়কঃ; নর+অৌ=নরৌ; ভো+অতি=ভবতি।
- ধাতুপসর্গযোঃ নিত্যা - উত্+এতি=উদেতি; উপ+এতি=উপৈতি; অপ+ইক্ষতে=অপেক্ষতে।
- সমাসে নিত্যা - নীল+উত্পলম্=নীলোত্পলম্; বিদ্যা+আলয়ঃ=বিদ্যালয়ঃ; পীত+অম্বরঃ=পীতাম্বরঃ।
- বাক্যে বিবক্ষাম্ অপেক্ষতে- অর্থাৎ বাক্যে সন্ধি বজ্রার ইচ্ছাধীন।
- সন্ধি-প্রকারভেদঃ – স্বরসন্ধি (অচ্-সন্ধি), ব্যঞ্জনসন্ধি (হল্-সন্ধি), বিসর্গসন্ধি চ।

স্বর-সন্ধি

- ইকোয়ণটি – ই-ঐ, উ-ঊ, ঋ, ৳ ভিন্ন অন্য স্বরবর্ণ পরশব্দের প্রথম বর্ণ হলে, পূর্বশব্দের অন্তিম বর্ণ ই-ঐ স্থানে য়,
- উ-ঊ স্থানে ষ্,
- ঋ স্থানে র এবং
- ৳ স্থানে ৳ আদেশ হয়।

<p>इ/अे + इ,अे,उ,उे,अ,ल् भिन्न अन्य अ़वर्ण = य</p>	<p>उ/उे + इ,अे,उ,उे,अ,ल् भिन्न अन्य अ़वर्ण = व</p>	<p>अ + इ,अे,उ,उे,अ,ल् भिन्न अन्य अ़वर्ण = र</p>	<p>ल् + इ,अे,उ,उे,अ,ल् भिन्न अन्य अ़वर्ण = ल</p>
<p>दध्यत्र (दधि+अत्र), यद्यपि, अभ्यागतः, इत्याकर्ण्य, इत्यादि, अभ्युदयः, प्रत्युपकारः, प्रत्येकम्, यद्येवम्, दध्योदनम्, अत्यौदार्यम्, नद्यम्बु, नद्युदकम्, सख्युक्तिः</p>	<p>अन्वयः (अनु+अयः), गुर्वादेशः, गुर्वाज्ञा, स्वागतम्, अन्वेषणम्, शिश्वैक्यम्, कट्वौषधिः, वध्वागमनम्, वध्वादेशः</p>	<p>मात्रनुमतिः (मातृ+अनुमतिः), मात्रवज्ञा, पित्रर्थः, मात्रङ्कः, पित्त्रालयः, पित्त्राज्ञा, पित्त्रुपदेशः, दात्रौदार्यम्</p>	<p>लाकृतिः (लृ+आकृतिः), लादेशः</p>

एचोऽयवायावः एचोऽयवायावः (पा.6.1.78)-

- अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ भिन्न स्वरवर्ण परशब्देर प्रथम वर्ण हले, पूर्वशब्देर अन्तिम वर्ण ए स्थाने –अय
ओ स्थाने –अव्
ऐ स्थाने –आय
औ स्थाने –आव् आदेशे हय।

ए + ए, ऐ, ओ, औ भिन्न अन्य स्वरवर्ण= अय	ओ + ए, ऐ, ओ, औ भिन्न अन्य स्वरवर्ण= अव्	ऐ + ए, ऐ, ओ, औ भिन्न अन्य स्वरवर्ण= आय	औ + ए, ऐ, ओ, औ भिन्न अन्य स्वरवर्ण= आव
नयनम् (नै+अनम्), शयनम्	वटवृक्षः(वट+ऋक्षः) , भवति, भवनम्, पवनः	नायकः(नै+अकः), गायकः	पावकः(पौ+अकः), नाविकः

आद् गुणः

आद् गुणः (पा.6.1.87)

अर्थात् - पूर्वशब्देर अन्तिम वर्ण अ/आ-एर सङ्गे
पर शब्देर प्रथम वर्ण
इ/ई -एर संयोगे = ए,
उ/ऊ -एर संयोगे = ओ,
ऋ संयोगे = अर्
ल् संयोगे = अल् हय।

अ/आ + इ/ई = ए	अ/आ + उ/ऊ = ओ	अ/आ + ऋ = अर्	अ/आ + ल् = अल्
देवेन्द्रः(देव+इन्द्रः) , उपेन्द्रः, महेन्द्रः, नरेन्द्रः, तथेति, अपेक्षते, सुरेशः, गणेश्वरः, रमेशः, महेश्वरः	नलोदयः(नल+उद यः), हितोपदेशः, गङ्गोदकम्, एकोनः, महोर्मिः, पीनोरुः	देवर्षिः(देव+ऋषिः) , ब्रह्मर्षिः, महर्षिः, वर्षर्तुः	तवल्कारः (तव+लृकारः)

बृद्धिरेचि

वृद्धिरेचि (पा. 6.1.88)

पूर्वशब्देर शेष वर्ण अ/आ -एर सङ्गे
पर शब्देर प्रथम वर्ण ए/ऐ संयोगे - ऐ
उ /उै संयोगे - उै एकदेशे इय।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ	अ/आ + उ/उै = उै
अद्यैव(अद्य+एव), एकैकम्, तथैव, देवैश्वर्यम्, विद्यैश्वर्यम्	वनौषधि(वन+औषधि), तण्डुलौदनम्, गङ्गौघः, धनौत्सुक्यम्, महौदार्यम्

अकः सवर्णे दीर्घः

अकः सवर्णे दीर्घः (पा.6.1.101)

पूर्वशब्देर शेष ह्रस्व वा दीर्घ स्वरवर्ण-एर सङ्गे परवर्ती शब्देर प्रथम ह्रस्व वा दीर्घ स्वरवर्णेर सङ्कि हले दीर्घ एकादेशेऽयम्।

अ/आ + अ/आ = आ	इ/ऋ + इ/ऋ = ऋ	उ/ऌ + उ/ऌ = ऌ	ऋ + ऋ = दीर्घ ऋ	ल् + ल् = दीर्घ ल्
शशाङ्कः (शश+अङ्कः), सुरारिः, देवालयः, हिमालयः, रत्नाकरः, दयार्णवः, लतात्र, विद्यार्जनम्, गङ्गागमनम्, विद्यालयः	गिरीन्द्रः (गिरि+इन्द्रः), मनीन्द्रः, क्षितीश्वरः, परीक्षा, सुधीन्द्रः, महीन्द्रः, श्रीशः, सतीशः, अवनीश्वरः	विधूदयः (विधु+उदयः), गुरुकितः, लघूर्मिः, वधूत्सवः, भूर्ध्वम्	पितृणम् (पितृ+ऋणम्), भ्रातृदधिः, मातृणम्	होत्लृकारः

एङः पदान्तादति

एङः पदान्तादति (पा.6.1.109)

पूर्व शब्देर शेष वर्ण ए वा ओ सङ्गे परवर्ती शब्देर प्रथम वर्ण अ-कारेण सङ्क्ति हले अ-कार लोप ह्ये एवञ्च तार स्थाने अवग्रह (खण्ड अ-कार) ह्य।

ए + अ = एङ	ओ + अ = ओङ
हरेऽव(हरे+अव), तेऽपि, वृक्षेऽस्मिन्, वनेऽत्र	बालोऽवदत्(बालो+अवदत्), विष्णोऽत्र, गुरोऽव, लोकोऽयम्

প্রকৃতিभावः प्रकृतिभाव

১. পূর্বশব্দস্থ প্লুত বা প্রগৃহ্য শব্দের সঙ্গে স্বরবর্ণের সংযোগে প্রকৃতিभाव হয়।
উদাহরণ-

कृष् (७) + आगच्छ - कृष् आगच्छ (प्लुत-এর উদাহরণ)

मूनी + एतौ - मूनी एतौ (प्रगृह्य-এর উদাহরণ)

साधु + इमौ - साधु इमौ

लते + इमे - लता इमे

২. পূর্বশব্দস্থ অদস্ শব্দের সঙ্গে স্বরবর্ণের সন্ধি হলে
ম-কার পরে স্থিত ঙ্গ-কার ও উ-কার এদের প্রকৃতিभाव হয়।

উদাহরণ -

अमी + अश्वाः - अमी अश्वाः

अमू + आसाते - अमू आसाते

बिशेष श्वर-सन्धि

शकन्धुः (शक+अन्धुः),

कुलटा (कुल+अटा),

कर्कन्धुः (कर्क+अन्धुः),

मार्तण्डः (मार्त+अण्डः),

सारङ्गः (सार+अङ्गः)

ব্যঞ্জন-সন্ধি

ব্যঞ্জন বর্ণের সঙ্গে ব্যঞ্জন বর্ণের সন্ধিকে ব্যঞ্জন-
সন্ধি বলা হয়।

ব্যঞ্জনবর্ণগুলো -

ক-ম পর্যন্ত ২৫টি বর্গীয় ব্যঞ্জনবর্ণ (ক,চ,ট,ত,প)

অনুস্বাঃ - য়,র,ল,ব

উষ্মবর্ণাঃ - শ,ষ,স,হ

शुः शूना शूः (शू-सन्धि)

स्(ः)/त-वर्गेर वर्णसमूह (त,थ,द,ध,न)

+

श/च-वर्गेर वर्णसमूह (च,छ,ज,झ,ञ)

=

स्(ः)स्थाने श एवं त-वर्गेर वर्णसमूहेर स्थाने च-वर्गेर वर्णसमूहेर आदेश
हवे।

- उदाहरण- रामः(स)+शते=रामश्शते।
कः(स)+चित्=कश्चित्।

रामः(स)+चिनोति=रामश्चिनोति।
हरिः(स)+शते=हरिश्शते।

उत्+चारणम्=उच्चारणम्।

तत्+छविः=तच्छविः।

सद्+जनः=सज्जनः।

महान्+जय्=महाञ्जयः।

याच्+ना=याञ्चा।

एतत्+जलम्=एतज्जलम्।

बृहत्+झरः=बृहज्झरः।

भवान्+जीवतु=भवाञ्जीवतु।

यज्+नः=यज्ञः।

ষ্টুনা ষ্টুঃ (ষ্টুত্ব-সন্ধি)

স্(ঃ)/ত-বর্গের বর্ণসমূহ (ত,থ,দ,ধ,ন)

+

ষ/ট-বর্গের বর্ণসমূহ (ট,ঠ,ড,ঢ,ণ)

=

স্(ঃ)স্থানে ষ এবং ত-বর্গের বর্ণসমূহের স্থানে ট-বর্গের বর্ণসমূহের আদেশ হবে।

উদাহরণ -

রাম:(স)+ষষ্ঠ:=রামষষ্ঠ:।

ধনু:(স)+টঙ্কার:=ধনুটঙ্কার:।

তত্+টীকা=তট্‌টীকা।

ইষ্+ত:=ইষ্ট:।

দুষ্+ত:=দুষ্ট:।

ষষ্+থ:=ষষ্ঠ:।

উদ্+ডয়নম্=উড্‌ডয়নম্।

কৃষ্+ন:=কৃষ্ণা:।

বিষ্+নু:=বিষ্ণু:।

यरोः अनुनासिकेः अनुनासिको वा (अनुनासिक-सन्धि)

यर-वर्ण, अर्थात् इ व्यतित अन्य समस्त व्यञ्जन-वर्ण

+

अनुनासिकवर्ण (ङ, ञ, ण, न, म)

=

यर-वर्ण स्थाने विकल्पे अनुनासिक आदेश হয়।

উদাহরণ-

एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः / एतद्-मुरारिः।
किञ्चित् + नयति = किञ्चिन्नयति / किञ्चिद्-नयति।
जगत् + नाथः = जगन्नाथः / जगद्-नाथः।
दिग् + नागः = दिङ्नागः / दिग्-नागः।
पद् + नगः = पन्नगः / पद्-नगः।
षट् + मुखः = षण्मुखः / षड्-मुखः।

बलां ङश् बशि

$$\begin{aligned} & \text{बल-बर्णर (१,२,७,८ बर्ग्य बर्ण एबं श,ष,स,ह)} \\ & \quad + \\ & \text{बश-बर्णर (७,८ बर्ग्य बर्ण)} \\ & \quad = \end{aligned}$$

बश-बर्णर स्थाने ङश-बर्ण (ङ,ब,ग,ड,द) ७ बर्ग्य बर्ण आदेश हय
उदाहरण -
महत + धनम् = महद्भनम्।

ঝলাং জশোংন্তে

পদের শেষে ঝল্ বর্ণ (১,২,৩,৪ বর্গ্য বর্ণ, উল্লবর্ণ (শ,ষ,স,হ))
+
স্বরবর্ণ, অন্তঃস্থ বর্ণ (য়,র,ল,ব), ৩,৫ বর্গ্য বর্ণ
=
ঝল্ বর্ণ স্থানে জশ্ (জ,ব,গ,ড়,দ) আদেশ হয়।

উদাহরণ -

অচ্ + অন্তঃ = অজন্তঃ।

উত্ + দেশ্যম্ = উদ্দেশ্যম্।

চিত্ + আনন্দঃ = চিদানন্দঃ।

মহত্ + অরণ্যম্ = মহদরণ্যম্।

বাক্ + ইশঃ = বাগীশঃ।

ষট্ + এব = ষড্‌এব।

অপ্ + জম্ = অভ্জম্।

ঋক্ + বেদঃ = ঋগ্‌বেদঃ।

জগত্ + ইশ্বরঃ = জগদীশ্বরঃ।

সুপ্ + অন্তঃ = সুবন্তঃ।

সম্রাট্ + অস্তি = সম্রাড্‌অস্তি।

তোর্লি (তোঃ লি)

ত-বর্গের যে কোন বর্ণ + ল-কার
=

ত-বর্গের বর্ণের স্থানে ল-কার হয়।

উদাহরণ -

उत् + लेखः = उल्लेखः। तत् + लयः = तल्लयः।

तत् + लीनः = तल्लीनः। तत् + लब्धम् = तल्लब्धम्।

भवान् + लिखति = भवॉल्लिखति।

विद्वान् + लिखति = विद्वॉल्लिखति।

थरि ङ

झलु वरुण (ॡ,ॢ,ॣ,। वरुण वरुण, उलुलुवरुण (श,ष,स,ह))
+
थरु (ॡ,ॢ वरुण वरुण)
=

झलु वरुण सुवने ङरु वरुण (ॡ वरुण वरुण ॢ श,ष,स) आदेश हय।

उदहरण -

कुधु + पलुसल = कुतुपलुसल।

तदु + कललः = ततुकललः।

दलुगु + पललः = दलुकुपललः।

दलुगु + पतलल = दलुकुपतललः।

वलुपदु + कललः = वलुपतुकललः।

सदु + कलरः = सतुकलरः।

सुहुदु + कुरलडतल = सुहुतुकुरलडतल।

सुहुदु + समलपे = सुहुतुसमलपे।

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

अनुस्वार + वर्ग्य वा अन्तःसु वर्ण (यय् वर्ण)

=

वर्ग्य वर्णेर अन्तिम वर्ण।

उदाहरण -

अं+कितः=अङ्कितः।

किं+चित्=किञ्चित्।

कुं+ठितः=कुण्ठितः।

कं+पनम्=कम्पनम्।

शं+का=शङ्का।

शां+तः=शान्तः।

गुं+फितः=गुम्फितः।

मुं+डितः=मुण्डितः।

ऋयो हो॑न्यतरस्याम्

ऋय् वर्ण (१,२,७,८ वर्ग्य वर्ण) + ह-कार

=

पूर्वे स्थित वर्ग्य वर्ण स्थाने সেই বর্ণের তৃতীয় বর্ণ এবং হ-
কার স্থানে পূর্ব বর্গ্য বর্ণের চতুর্থ বর্ণ বিকল্পে আদেশ হয়।

উদাহরণ -

तत्+हितः= तद्धितः/तद्हितः।

वाक्+हरिः=वाग्घरिः/वाग्हरिः।

तत्+हासः=तद्धाहः/तद्हासः।

उत्+हतः=उद्धतः/उद्हतः।

वाक्+हसति=वाग्घसति/वाग्हसति।

अप्+हरणाम्=अब्भरणाम्/अब्हरणाम्।

मोः नुस्वारः

म् + व्यञ्जन वर्ण = म-कार स्थाने अनुस्वार

उदाहरण -

कार्यम्+कुरु= कार्यं कुरु।

धर्मं +चर=धर्मं चर।

सत्यम् +वद=सत्यं वद।

हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे।

शीघ्रम्+याति=शीघ्रं याति।

शश्चाः अटि

वर्ग्य १,२,७,८ + श = श-कार स्थाने विकल्पे छ-कार

उदाहरण -

तत्+श्रत्वा=तच्छ्रत्वा/तच्-श्रत्वा। जगत+शान्तिः=जगच्छान्तिः/जगच्-शान्तिः। तत्+शिवः=तच्छिवः/तच्-शिवः।

तत्+शिला=तच्छिला/तच्-शिला।

वाक्+शरः=वाक्छरः/वाक्-शरः।

वाक्+शैते=वाक्छैते/वाक्-शैते।

षट्+शावकाः=षट्छावकाः/षट्-शावकाः।

सत्+शीलः=सच्छीलः/सच्-शीलः।

(स्रोः श्चुना श्चु-सूत्रे त-कारेण च-कार एवं शश्चाः अटि सूत्रे श-कारेण छ-कारं भवति।)

বিসর্গ সন্ধি

अः + अ = ोः

उदाहरण -

कः+अयम् = कोऽयम्,

कृष्णः+अत्र=कृष्णोऽत्र,

देवः+अधुना=देवोऽधुना,

नृपः+अवदत्=नृपोऽवदत्,

धार्मिकः+अहसत्=धार्मिकोऽहसत्,

वलरामः+अच्युतः=वलरामोऽच्युतः,

यः+अपि=योऽपि,

शिवः+अर्च्यः=शिवोऽर्च्यः,

सः+अत्र=सोऽत्र,

सः+अपि=सोऽपि,

सः+अहम्=सोऽहम्,

सः+अयम्=सोऽयम्।

अः + अ व्यतिथ अन्य स्वरवर्ण = ः लेप

उदाहरण -

भीमः+आगच्छति= भीम आगच्छति।

सूर्यः+उदयति=सूर्य उदयति।

कः+एषः= क एषः।

कतः+आगतः= कत आगतः,

गौविन्दः+इच्छति= गोविन्द इच्छति।

सः+इच्छति= स इच्छति।

सतः+आगच्छति=सत आगच्छति।

कौकः+आस्ते=काक आस्ते।

च्छात्राः +इमे=च्छात्रा इमे।

अः + म्दू व्यञ्जनवर्ण (वर्ग ७,८,९, अन्तःस्वर्ण, ह) = ो

उदाहरण -

गजः+ गच्छति= गजो गच्छति।
घोटकः+धावति= घोटको धावति।
नरः+याति= नरो याति।
वालकः+ हसति= वालको हसति।
मनः+रथः= मनोरथः।
रामः+गच्छति= रामो गच्छति।
श्यामः+वदति= श्यामो वदति।
हरः+नयति= हरो नयति।
नमः+नमः=नमो नमः।
नमः+भगवते= नमो भगवते।
निपुणः+वक्ता = निपुणो वक्ता।

आः + स्वरवर्ण, म्दु व्यञ्जनवर्ण (वर्ग ७,४,५, अन्तःस्वरवर्ण, ह)

=

उदाहरण -

ः लोप

च्छात्राः+आगच्छन्ति= च्छात्रा आगच्छन्ति।

लताः+एताः= लता एताः।

कुक्कुराः+धावन्ति=कुक्कुरा धावन्ति।

कृषकाः+उपस्थिताः= कृषका उपस्थिताः।

मेघाः+गर्जन्ति=मेघा गर्जन्ति।

मयूराः +नृत्यन्ति = मयूरा नृत्यन्ति।

अ,आ व्यतिथ अन्य स्वरवर्णेर सङ्गे ः + स्वरवर्ण, म्दू व्यञ्जनवर्ण
(वर्ग्य ७,४,५, अन्तःस्वरवर्ण, ह)

उदाहरण -

= र

कविः+अलिखत्= कविरलिखत्।

गुरुः+अवदत्= गुरुरवदत्।

साधुः+आगच्छति= साधुरागच्छति।

गुरुः+उपदेशः = गुरुरुपदेशः।

रविः+उदेति= रविरुदेति।

हरिः+अयः= हरिरयम्।

बुद्धिः+ नास्ति = बुद्धिर्नास्ति।

मुनिः+याति= मुनिर्याति।

मातुः+जनकः= मातुर्जनकः।

शिशुः+हसति= शिशुर्हसति।

अग्निः+अत्र= अग्निरत्र।

गुरुः+भाषणम्= गुरोर्भाषणम्।

वधूः+एषा= वधूरेषा।

मातः+आगच्छ= मातरागच्छ।

◌ः + वर्ग्य १,२, एवं उभयवर्ग
= ◌ः स्थाने श,ष,स-कार आदेश

उदाहरण -

कः+चित्= कश्चित्।

गजाः+तिष्ठन्ति= गजास्तिष्ठन्ति।

मृण्मयः+ठक्कुरः= मृण्मयष्ठक्कुरः।

धनुः+ टङ्कारः= धनुष्टङ्कारः।

मनः+तापः= मनस्तापः।

रामः+ शैते= रामश्शैते।

रामः+सहते= रामस्सहते।

बालकाः+षट्= बालकाष्षट्

Selected Important Euphonic Combinations

पितृ + आदेशः =
पित्रादेशः
रवौ + अस्तमेति =
रवावस्तमेति
हसन् + आगतः =
हसन्नागतः
अमी + अश्वाः =
अमी अश्वाः
विधुः + राजते =
विधुराजते
नमः + कारः =
नमस्कारः
सु + आगतम् =
स्वागतम्

दिक् + अन्तः =
दिगन्तः
पतन् + अञ्जलिः =
पतञ्जलिः
नदी + अश्वु =
नद्यश्वु
मनस् + ङीष्वा =
मनीष्वा
तान् + तान् =
तांस्तान्
पुनः + अपि =
पुनरपि
चक्षुः + रोगः =
चक्षुरोगः

सम् + कारः =
संस्कारः
यदि + अपि =
यद्यपि
मुनी + इमौ =
मुनी इमौ
रवौ + उदिते =
रवाबुदिते
पितः + रश्मः =
पितारश्मः
कः + अर्थः =
कोऽर्थः
अभि + उदयः =
अभ्युदयः

বৃক্ষঃ + ছায়া =
বৃক্ষচ্ছায়া
পূর্ণঃ + চন্দ্রঃ =
পূর্ণশ্চন্দ্রঃ
অনু + এষণম্ =
অন্বেষণম্
পৌ + অকঃ =
পাবকঃ
নবঃ + অয়ম্ =
নরোৎয়ম্
প্রাতঃ + রম্যম্ =
প্রাতারম্যম্
ভৌ + অকঃ =
ভাবুকঃ
মহান্ + লাভঃ =
মহালাভঃ
পুনঃ + রমতে =
পুনারমতে
আয়ুঃ + কামঃ =
আয়ুষ্কামঃ
পিতৃ + অনুমতিঃ =
পিত্রানুমতিঃ
তস্মিন্ + এব =

তস্মিন্লেব
নিঃ + রোগঃ =
নিরোগঃ
দ্বৌ + অপি =
দ্বাবপি
কবী + ইমৌ =
কবী ইমৌ
সদ্যঃ + জাতঃ =
সদ্যোজাতঃ
পুনঃ + ইহ =
পুনরিহ
হসন্ + চলতি =
হসংচলতি
কুর্বন্ + আস্তে =
কুর্বন্নাস্তে
প্রাতঃ + রবিঃ =
প্রাতারবিঃ
জগৎ + বন্ধুঃ =
জগদ্বন্ধুঃ
নিঃ + ফলম্ = নিষ্ফলম্
পতন্ + তরুঃ =
লতে + এতে =
লতে এতে

সীন্ + অন্তঃ =
যাচতে + অর্থম্ =
হরিঃ + রম্য =
প্র + এজতে =
প্রেজতে
ধাবন্ + ছাগঃ =
মহান্ + শব্দঃ =
মহাশব্দ
তরোঃ + ছায়া =
গো + অক্ষঃ =
গবাক্ষঃ